प्रौढ़ शिक्षा माला, संख्या १००
भारत सरकार द्वारा स्वीकृत

भारत

५,०००

वर्ष

पहले

इदारा तालीम व तरक्की जामिआ,
देहली

मक्तबा जामिआ लिमिटेड
देहली

भारत पांच हज़ार वर्ष पहिले

कहानी का नाम ही कुछ आनंददायक होता है। किसी से कहो आओ भाई एक कहानी सुनाएं, तो वह सौ काम छोड़ कर कहानी सुनने बैठ जाएगा। बच्चे, जवान, बूढ़े सब कहानियां सुन कर खुश होते हैं। परन्तु एक ही कहानी बच्चों और बूढ़ों दोनों के लिये रोचक नहीं हो सकती। कहानी कहानी में अंतर होता है। कुछ कहानियां झूठी होती हैं, कुछ सच्ची होती हैं और कुछ ऐसी जिन में झूठ-सच सब कुछ मिला होता है। झूठी कहानियों से केवल बच्चों का ही मन बहलता है। झूठी-सच्ची कहानियां जवानों को भाती हैं, पर सच्ची कहानियों में कुछ ऐसी बात होती है कि यदि वे अच्छी तरह कही जाएं तो उनमें सबको आनन्द आता है। सच्ची कहानियों में सबसे अधिक मनोरंजक और मन को लुभाने वाली दुनिया के इतिहास की कहानी है। परन्तु इस कहानी का कहना और समझना दोनों बातें कठिन हैं। कठिन इसलिये हैं कि दुनिया

की कहानी इतनी पुरानी है कि जब तक ठीक ढंग से कही न जाये और ध्यान से सुनी न जाये उसका समझना कठिन है।

दुनिया की कहानी अनोखी है

संसार की पिछली बातें इतनी पुरानी हैं कि हम में से अधिकतर यह भी नहीं जानते कि कौन सी बात कब हुई है। उदाहरण के तौर पर, हम में से शायद ही कोई ऐसा होगा जिसने महाभारत के युद्ध, रामचन्द्र जी की कहानी, महात्मा बुद्ध के धर्म, सिकन्दर के आक्रमण, विक्रमादित्य की कहानियां, अमीर खुसरो की पहेलियां, अकबर के नवरत्न, महाराणा प्रताप, वीर केसरी शिवाजी की वीरता और सन् ५७ के गदर के बारे में कुछ न सुना हो। परन्तु साथ ही साथ हम में बहुत कम लोग ऐसे हैं जिन्हें यह मालूम है कि सिकन्दर के हमले को २३०० वर्ष के लगभग हुए हैं, या अकबर के राज्य को हुये ४०० वर्ष हो गये। क्या आप लोगों को यह सुन कर अचम्भा नहीं होगा कि अमीन खुसरो, जिनकी पहेलियां आप दिन रात सुनते हैं, अब से कोई ७०० वर्ष पहिले हो चुके हैं। सिकन्दर जिसका नाम अब तक लोगों की ज़बान पर है, कोई २३०० वर्ष हुए भारत आया था। बौद्ध धर्म को आरम्भ हुए ढाई हज़ार वर्ष हो गये हैं। इससे भी अधिक यदि कोई आप से कहे कि रामचन्द्र जी और सीता जी की कहानी चार हज़ार वर्ष और महाभारत के युद्ध का हाल साढ़े तीन हज़ार वर्ष से भी पुराना है, तो क्या आपको यह सुन कर अचम्भा नहीं होता? हमें आश्चर्य क्यों होता है? केवल इसलिये कि दुनिया की कहानी है ही इतनी अनोखी कि अब तक इसके ओर-छोर का किसी को पता नहीं।

सभ्यता कितनी पुरानी ?

अब तक लोगों का विचार था कि संसार की सभ्यता का आरम्भ कोई पांच हज़ार वर्ष पहिले हुआ था। यह सभ्यता सबसे पहिले मिस्र, ईराक और भारत में आरम्भ हुई। इन देशों में आज से ५००० वर्ष पहिले बड़े-बड़े नगर बसे हुए थे। उन नगरों में लोग ऊंची-ऊंची हवेलियों में रहते थे। वे लोग सोने चांदी के गहने पहिनते थे और अपने अपने काम आपस में मिलकर करते थे। सच पूछा जाये तो इसी का नाम सभ्यता है। कहते हैं, संसार में हजारों साल पहिले मनुष्य बहुत बुरी दशा में थे। लोग वनों में झोपड़ियां और मैदानों में कच्चे घर बना कर रहते थे। न उन्हें कपड़े पहिनने का ढंग आता था और न उन्हें खाने-पीने की अधिक चीज़ों की जानकारी थी। जंगली पशुओं का मांस उनका मनभाता भोजन था। उनमें सभ्यता नाम को भी न थी, वे निरे जंगली थे। विद्वानों का विचार था कि पांच हज़ार वर्ष पहिले के भारत की यही सच्ची कहानी है। परन्तु आदमी कभी निठल्ला नहीं बैठता। जहाँ एक ओर वह विज्ञान (साइंस) की नई नई खोजों की सहायता से बड़े बड़े नगर बसाता चला जा रहा है, वहां दूसरी ओर भूमि को खोद कर पुराने शहरों के चिन्हों की खोज में भी लगा हुआ है। पिछले पंद्रह बीस वर्षों के भीतर भारत में भी ऐसे कई नगर खोद कर निकाले गए हैं। इनसे पता चलता है कि हमारा पुराना भारत कैसा था, जंगली या सभ्य ?

मोहन जोदड़ो का नगर

भारत में जितने नगर अब तक खोद कर निकाले गये हैं उन में सबसे पुराना मोहन जोदड़ो, मोहन का टीला है। मोहन जोदड़ो सिन्ध प्रान्त के प्रसिद्ध नगर लाड़काना से २५ मील दूर है। यह नगर लगभग ३० फुट गहरी खुदाई के बाद
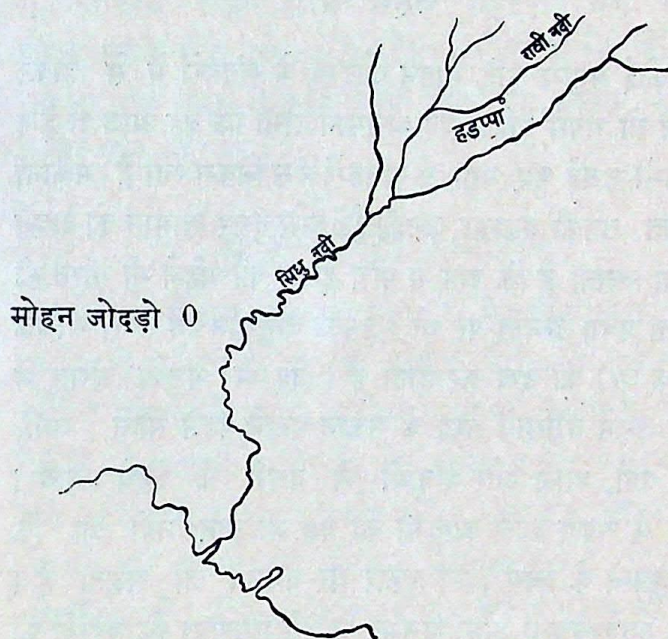
निकला है। आजकल इसके पास से सिंध नदी बहती हुई समुद्र में गिरती है। कहते हैं कि प्राचीन काल में यहां महरान नाम की एक और नदी भी थी और मोहन जोदड़ो के लोग इन नदियों की घाटियों में गेहूँ और जौ की खेती करते थे। वे इन्हीं नदियों के रास्ते आस-पास की बस्तियों में आते जाते और लेन-देन करते थे। मोहन जोदड़ो में कई

वर्ष की खुदाई के बाद जो चीज़ें निकली हैं, उनसे अनुमान (अन्दाजा) होता है कि भारत का सबसे पहिला नगर कैसा था और यहां के सबसे प्राचीन निवासियों (पुराने रहने वालों) का जीवन और रहन सहन कैसा था।

पहिले मनुष्य को घर भी बनाने का ढँग नहीं था

कोई मनुष्य यदि मोहन जोदड़ो के खंडहरों में से होकर निकले तो सबसे पहिले यह अनुमान होगा कि वह आज ही कल के किसी उजड़े हुए नगर के खंडहरों में से निकल रहा है। मकानों के चित्र, उनकी बनावट, उनकी ईंटें और दूसरे सामान को देखने से पता चलता है कि अब से पांच हज़ार वर्ष पहिले भी भारत की सभ्यता बहुत उन्नति पर थी। इसका अनुमान हमें सबसे अधिक वहां के घरों को देख कर होता है। जब से मनुष्य संसार में आया उसने बीसियों तरह के मकान अपने रहने सहने, गर्मी, सर्दी, वर्षा, ओले और शत्रुओं से बचने के लिये बनाये। संसार के सबसे पहले आदमी को यह भी ज्ञान नहीं था कि सिर छुपाने के लिये किस प्रकार घर बनाया जा सकता है। परन्तु आवश्यकता और अनुभव ने उसे सिखाया कि पहाड़ों की गुफाएं उसके घर बन सकती हैं। हज़ारों वर्ष इन गुफाओं में जीवन बिताने के बाद उसने यह सीखा कि गीली मिट्टी, पेड़ों की छालें और पत्तियां, बाँस और लकड़ी के लट्ठे भी इस काम में आ सकते हैं। तब उसने इन चीजों की सहायता से झोप-ड़ियां बनाईं और हज़ारों वर्ष इन झोपड़ियों में काटे। फिर उसे पता चला कि ईंटों से भी घर बन सकते हैं। ईंटों को आग में पकाया जा सकता है और उन्हें गारे, चूने और सीमेंट

से जोड़ा भी जा सकता है। आगे चल कर उसे यह भी पता चला कि इन ईंटों पर रंग रोगन फेर कर सुन्दर भी बना सकते हैं। घरों में लकड़ी के दरवाज़े तथा प्रकाश के लिये खिड़कियाँ भी लग सकती हैं। इसी प्रकार नई आवश्यकता और नया अनुभव पग पग पर मनुष्य को नई बातें सिखाता रहा। और धीरे धीरे गुफाओं में रहने वाला आदमी ऊंची ऊंची हवेलियों में रहने लगा। मोहन जोदड़ो के घर महल तो नहीं कहे जा सकते, परन्तु उन्हें देख कर यह विचार होता है कि जो लोग ऐसे घर बना सकते थे उनके लिये महलों का बनाना भी कोई कठिन काम नहीं था।

मोहन जोदड़ो के मकान

मोहन जोदड़ो के भवन आम तौर से तीन प्रकार के हैं, १. लोगों के रहने के घर, २. मन्दिर या पूजास्थान आदि, और ३. जनता के नहाने के लिये स्नान-घर। रहने के घर छोटे भी हैं और बड़े भी। छोटे से छोटे मकान में दो कमरे हैं और बड़े बड़े मकानों में १५-१५ और २०-२० कमरे हैं। मोहन जोदड़ो के एक बड़े मकान की बनावट इस प्रकार है: यह मकान दोमंजिला है। नीचे की मंजिल में चार बड़े और दस छोटे कमरे हैं। एक कमरा दरवाजे के पास चौकीदार के लिये है। इसके अलावा एक कमरे में पक्का कुआं बना हुआ है। इसी कमरे के बराबर में स्नान-घर है। ऊपर की मंजिल के कमरों में जाने के लिये तीन सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इस मकान का द्वार शहर की सब से बड़ी सड़क पर है। मुख्य द्वार के दायें बायें दो दरवाजे और हैं। कुएं वाले कमरे में भी बाहर से एक दरवाज़ा है जो शायद इस लिए है कि लोग बाहर से आ कर आसानी से पानी

खींच सकें। मकान का फर्श पक्की ईंटों का बना है। दीवारें चार-चार पांच-पांच फुट मोटी हैं। घर में स्थान स्थान पर पक्की नालियां हैं जिन से गन्दा पानी बाहर निकल जाया करे। जहाँ नाली समाप्त होती है वहीं एक बड़ा सा बरतन रखा हुआ है। इस में पानी इकट्ठा होता है। बरतन भर जाने पर गन्दा पानी कहीं फेंक दिया जाता होगा। घर के कमरों को देख कर अनुमान होता है कि इनमें कुछ कमरे मेहमानों के ठहरने के लिये हैं और कुछ नौकरों के रहने के लिये। ऊपर के कमरे घर वालों के उठने बैठने, सोने और रहने के लिये हैं। रसोई-घर अलग बना है।

पूजा-स्थान और स्नान-घर

इन सब चीज़ों को देख कर निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि मोहन जोदड़ो के लोग बहुत अच्छे मकानों में रहते थे। स्वास्थ्य और सफाई के सिद्धान्तों का उनको बहुत ध्यान था। उनके पास जीवन को सुखदायी और आनन्दमय बनाने के साधन मौजूद थे।

रहने के मकानों के सिवाय दूसरी तरह के मकान वे हैं जिनके विषय में यह विचार होता है कि वे शायद मंदिर और पूजा-स्थान हैं। परन्तु यह बात निश्चय के साथ नहीं कही जा सकती, क्योंकि इतने वर्षों के बीत जाने के बाद अब हमारे पास इसका कोई प्रमाण (सबूत) नहीं है और न इन मकानों की बनावट से ही इस बात का कोई पक्का प्रमाण मिलता है। इन मकानों के अलावा शहर के भिन्न भिन्न इलाकों में कुछ स्नान-घर बने हुए हैं। ये जन साधारण के लिये थे। इन स्नान घरों में एक तो बहुत ही बड़ा है जिसका चित्र इस प्रकार है :

ठीक बीच में एक चबूतरा है जिसके चारों ओर चौड़े चौड़े आंगन हैं। इन आंगनों के तीन तरफ बहुत से दालान और कमरे हैं। चबूतरे के बीचों बीच एक बहुत बड़ा कुंड है जिसकी लम्बाई ३९ फुट, चौड़ाई ३२ फुट और गहराई ८ फुट है। कुंड में उतरने के लिये दो तरफ़ पक्की सीढ़ियां बनी हैं। स्नान घर का भवन पक्की ईंटों का बहुत मजबूत और सुन्दर बना हुआ है। बाहरी दीवार की चौड़ाई ७ फुट और भीतरी दीवारों की चौड़ाई ४ फुट के लगभग है। कुंड की दीवारों पर भिन्न भिन्न प्रकार के ऐसे मसाले लगाए गए हैं कि वे पानी को बिल्कुल न सोख सकें।

खान-पान

इन मकानों के चित्रों से हमें यह पता चलता है कि हमारे देश के प्राचीन निवासी आज से पांच हजार वर्ष पहले सभ्यता की कितनी सीढ़ियां चढ़ चुके थे। मकानों के बाद दूसरा नम्बर खान-पान का आता है। अब तो संसार ने इतनी उन्नति कर ली है कि हर घर में बीसियों प्रकार के एक से एक अच्छे भोजन बनते हैं। गांव-गांव, नगर-नगर और देश-देश में हजारों नए नए भोजन और उन के खाने के पचासों नए नए ढंग हैं। परन्तु संसार सदा से तो ऐसा नहीं था। मनुष्य के विकास के हजारों वर्ष बाद तक वह केवल पशु-पक्षियों का मांस ही खाता रहा। जब उसे वन के कन्द-मूल, फल-फूल और पशुओं के दूध का पता चला तो मानो बहुत बड़ा धन उसके हाथ लग गया। हजारों वर्षों तक जीवन का आधार केवल मांस, मछली, जंगली फल और दूध ही रहा। अनाज का पता आदमी को सैकड़ों वर्ष बाद उस समय लगा जब उसने जंगली जीवन छोड़

कर नदियों के किनारे बस्तियां बसा कर रहना आरम्भ किया। मोहन जोदड़ो के लोग जौ और गेहूँ की खेती करते थे और इन्हीं के आटे की रोटी खाते थे। आटे के सिवाय बकरी, गाय, सुअर, चिड़ियां, मछली, कछुओं और पानी के दूसरे जीवों का मांस खाते थे। शायद दूध और फल का आहार (भोजन) भी करते थे।

मोहन जोदड़ो के बरतन

मनुष्य जब जंगलियों की तरह रहता था, तो बरतनों को काम में लाना बिलकुल नहीं जानता था। पहिले तो उसके खाने-पीने की चीज़ें ही ऐसी नहीं थीं जिनके लिये बरतनों की ज़रूरत पड़े और यदि कभी ज़रूरत पड़ी भी तो नारियल के छिलके और पत्ते बरतनों का काम देते थे। परन्तु मोहन जोदड़ो में

मोहन जोदड़ो के बरतन और मूर्तियां

हमें हांडियां, गिलास, प्याले, छोटी बड़ी कटोरियां, चम्मच, सुराहियां और चाकू आदि भी मिले हैं। ये बरतन अधिकतर मिट्टी, पत्थर और तांबे के हैं। परन्तु पत्थर और तांबे के

बरतन बहुत कम हैं, अधिकतर मिट्टी ही के हैं। इन्हें कुम्हारों ने बड़ी चतुराई से अपने चाकों पर बनाया है। इन बरतनों पर बहुत गाढ़ा और चमकदार भूरा या सफेद रंग का रोग़न फिरा हुआ है। कुछ बरतनों पर तरह तरह के चित्र और फूल-पत्तियां बनी हुई हैं। उन्हें देख कर पता चलता है कि बरतनों पर पालिश करने और उन पर फूल-पत्तियां बनाने की कला में मोहन जोदड़ो के निवासी बड़े चतुर थे।

बाट और कपड़े

बरतनों के सिवाय एक और चीज़ जिससे मोहन जोदड़ो के निवासियों के जीवन का पता चलता है, उनके बाट हैं। यह बाट छोटे बड़े कई प्रकार के हैं। इन से मालूम होता है कि सुनार और बनिये सब तराजू बाट से काम लेते थे। ये बाट बहुत पक्के और सुन्दर बने हुए हैं।

खान पान के बाद मनुष्य के जीवन में कपड़े का नम्बर है। हज़ारों वर्ष तक मनुष्य पशुओं की तरह नंग धड़ंग वनों में फिरता रहा। फिर अपने शरीर को सर्दी, गर्मी से बचाने के लिए पशुओं की खालों, पेड़ों की छालों और पत्तियों से शरीर को ढँकने लगा। उसके बाद पहले ऊन का और फिर सूत का नम्बर आया। सूत मानों मनुष्य की सभ्यता की उन्नति की एक बड़ी निशानी है। मोहन जोदड़ो के खंडहरों में सूती कपड़े के एक टुकड़े के सिवाय और कोई कपड़ा नहीं मिला। और इसका कारण यह है कि सूत पांच हजार वर्ष तक नहीं रह सकता। परन्तु अच्छे और बुरे चरखे इतने अधिक मिले हैं कि यह बात निश्चय के साथ कही जा सकती है कि धनी-

कङ्गाल सभी के घरों में चरखे का चलन था। लोग सूती कपड़े पहिनते थे। हां, यह बात ठीक ठीक नहीं बताई जा सकती कि कपड़े सिये भी जाते थे या नहीं, क्योंकि मोहन जोदड़ो की जिन मूर्तियों पर कपड़ा है वे केवल एक चादर से ढकी हुई हैं। विद्वानों का विचार है कि मोहन जोदड़ो वाले कपड़ा सी कर नहीं पहिनते थे। चादर को यों ही शरीर पर लपेट लेते थे।

गहने

मोहन जोदड़ो में गहने बहुत बड़ी संख्या में मिले हैं और उन्हें देखने से मालूम होता है कि स्त्री-पुरुष दोनों ही गहने पहनते थे। गले के हार, बाजूबन्द, कंगन और अंगूठियाँ स्त्री-पुरुष दोनों पहिनते थे। बालियाँ, कड़े, करधनी, नथ, बुंदे आदि केवल स्त्रियाँ पहिनती थीं। ये गहने सोने, चांदी, हाथी-दांत, लाल, यमन का लाल, पुखराज, नीलम और पन्ने जैसे बहुमूल्य और सुन्दर पत्थर के अलावा हड्डी, तांबे, पत्थर और पकाई हुई मिट्टी के बने हुए हैं। इससे पता चलता है कि धनवान बहुमूल्य धातुओं और पत्थरों के गहने पहिनते थे और गरीब हड्डी, तांबे, साधारण पत्थर और पकाई हुई मिट्टी के। इन गहनों को देख कर मालूम होता है कि गहने बनाने और मीनाकारी (जड़ाऊ काम करने) की कला प्राचीन भारत में बहुत उन्नति पर थी। इन गहनों की बनावट भी बहुत सुन्दर है और नमूने भी बहुत अच्छे और नए नए हैं। उनकी पालिश में भी बहुत सफ़ाई और सुथरापन है। गहनों में कहीं कहीं कई रंग के पत्थर एक जगह काम में लाए गए हैं। उन से भी पता चलता है कि मोहन जोदड़ो वाले रंगों को इस चतुराई

से एक दूसरे के साथ मिलाते थे कि देखने में वे अच्छे लगें। इन गहनों में सब से अधिक सुन्दर गले के हार हैं और इनके बनाने में उन्होंने कारीगरी भी अधिक दिखाई है। इन हारों के कुछ पत्थर के टुकड़ों की पालिश इतनी अच्छी है कि उन्हें देख कर शीशे का धोखा होता है। उन्हें बहुत सफ़ाई से गोल, अंडे के आकार, लंबे, चौकोर और ठोस आकारों में गढ़ा गया है। उन पर लाल, हरी, नीली, सफ़ेद और सुनहरी पालिश की गई है। तांबे, सोने और चाँदी के गहने भी इसी तरह सुन्दर हैं।

गहनों के सिवाय कुछ छोटी छोटी प्यालियां और सिंगारदान भी मिले हैं। प्यालियों में औरतें शायद मुँह पर लगाने की सुरखी रखती होंगी और सिंगारदानों में अपने गहने। सिंगारदानों में खाने बने हुए हैं और उन पर बहुत सुन्दर मीनाकारी का काम किया हुआ है।

मोहन जोदड़ो वालों के जीवन में तांबा बड़ी बहुमूल्य वस्तु थी। इससे वे गहने, सुइयाँ, कुल्हाड़ियां, कटारें, बरछियां, तीरों की नोकें, हथोड़े और निहानी जैसी चीजें भी बनाते थे। इसी तरह वे पत्थर और मिट्टी से गहने बनाने के साथ साथ निहानी, गोफन और गुलेल की गोलियां और चरखे भी बनाते थे।

काम-धंधे और मन बहलाव

मोहन जोदड़ो वाले हर काम में चतुर थे। उनमें किसान, कुम्हार, जुलाहे, सुनार, लुहार, बढ़ई सब प्रकार के लोग थे। सब अपने अपने कामों से अब से पांच हज़ार वर्ष पहले की सभ्यता को जीवित रखने के प्रयत्न में लगे हुए थे।

परन्तु मालूम होता है कि ये सब काम काज करने वाले आदमी अपने फ़ुरसत के समय में खेलते-कूदते और मन बहलाव भी करते थे। इसीलिए मोहन जोदड़ो में बच्चों और सियानों के खेलने की भी बहुत सी चीज़ें मिली हैं।

बच्चों के खिलौने तो साधारणतया आजकल के खिलौनों के समान ही हैं जैसे औरत, गाय, बंदर, कुत्ते, चिड़ियाँ आदि। छोटी छोटी पहिये वाली गाड़ियां, कुर्सियां, छोटी छोटी कुल्हियां आदि। इन खिलौनों के सिवा नगर के भिन्न भिन्न भागों में पक्की मिट्टी के हल्के लाल रंग के बहुत से पालने भी मिले हैं जिन पर छः और १ से ६ तक के अंक लिखे हैं। मालूम होता है कि इन पालनों से मोहन जोदड़ो वाले चौपड़ के समान खेल खेलते होंगे। वहां शतरंज के मोहरों के समान बहुत से मोहरे भी मिले हैं। यह खेल बच्चों के लिए नहीं, परन्तु सियानों के लिये होंगे। पालनों और मोहरों के अलावा वहां मिट्टी, हड्डी, काले पत्थर और स्लेट की लाल, हरी और नीले रंग की सादी और बेल बूटेदार खेलने की गोलियां भी मिली हैं। इन चीज़ों से पता चलता है कि गोलियां मोहन जोदड़ो वालों का साधारण खेल था। बच्चे और बड़े दोनों यह खेल खेलते थे।

मोहरों ने कई भेद बताए

मोहन जोदड़ो में जितनी चीज़ें पाई गई हैं उनमें ऐतिहासिक दृष्टि से कोई चीज़ इतनी महत्व की नहीं जितनी वहां की मोहरें हैं। ये मोहरें वहां के खंडहरों में बहुतायत से मिली हैं और कई आकार की हैं। ये पीले, भूरे, काले और सफ़ेद पत्थरों, हाथीदांत, तांबे और जस्त की बनी हुई हैं। इन मोहरों पर जो

चीज़ें खुदी हुई हैं उनमें प्राचीन भारत के निवासियों के विषय में बड़ी मार्के की बातें मालूम हुई हैं। विशेष कर उनके धर्म का पता या तो मोहरों पर खुदे हुए चित्रों से चलता है या फिर पत्थर या धातु की मूर्तियों से।

इन मोहरों को देखने से पता चलता है कि मोहन जोदड़ो के निवासी एक बड़े देवता और देवी के अतिरिक्त पीपल के पेड़, हिरन, बैल, हाथी, चीते, गैंडे, मगर आदि की पूजा करते थे। वे पत्थर की भी पूजा करते थे।
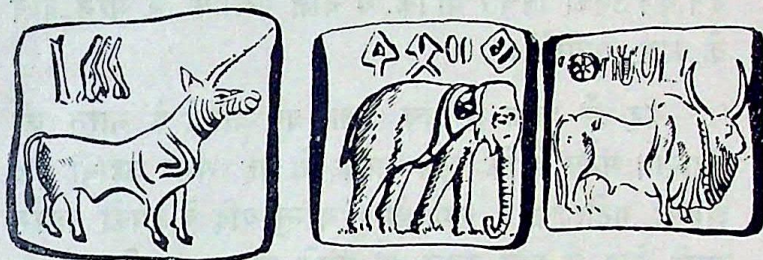
अब तक साधारणतः यह समझा जाता था कि भारत में पांच हजार वर्ष पहिले जंगली जातियां रहती थीं। देवी-देवताओं की पूजा को आरम्भ हुए कोई साढ़े तीन हज़ार वर्ष ही हुए हैं। परन्तु मोहन जोदड़ो की मोहरों और मूर्तियों के मिलने से यह विचार बिल्कुल ग़लत सिद्ध हुआ है।

अब मोहरों की सहायता से यह भी सिद्ध हो गया कि मोहन जोदड़ो वाले एक प्रकार की लिखाई भी लिखते थे। शायद उनके पास कुछ पुस्तकें भी थीं। परन्तु इस लिखाई को अब तक कोई पढ़ नहीं सका है। इसलिये इसका अर्थ अब तक किसी की समझ में नहीं आया है।

मोहन जोदड़ो के जीवन के विषय में अब तक हमने जो बातें बताई हैं वे इस कारण बहुत काम की हैं कि उन से हमारे

सामने पांच हज़ार वर्ष पहिले के भारतीय जीवन का चित्र खिंच जाता है। इस जीवन में कुछ मनोरंजक बातें भी हैं। सबसे अधिक मनोरंजक बात यह है कि मोहन जोदड़ो वाले अपने मुर्दों को जला कर उनकी राख किसी बड़े बरतन में बंद करके धरती में गाड़ दिया करते थे। उस के साथ धरती में बहुत सी आवश्यक चीजें जैसे खाने पीने के छोटे बड़े बरतन, चाकू, पत्थर के ढले हुए सुन्दर दाने, हाथों के कड़े, पुरुष, स्त्री, भेड़, बकरी और कुत्ते आदि की छोटी छोटी मूर्तियां भी धरती में गाड़ देते थे। उनका विचार था कि ये चीज़ें परलोक में मरने वाले के काम आयेंगी।

यह है आज से पाँच हज़ार वर्ष पहिले के भारत की कहानी। संभव है कि पढ़ने वालों को यह सच्ची कहानी कुछ अधिक मनोरंजक न लगी हो। परन्तु यदि वे इसको पढ़कर अपने देश के पांच हज़ार वर्ष पुराने जीवन का चित्र अपने मस्तिष्क (दिमाग) में बनाना आरम्भ करें तो इस कहानी का यह धुंधला और नीरस चित्र रंगीन और मनोरंजक मालूम होने लगेगा।

इतिहास

इस पुस्तक माला की निम्न लिखित पुस्तकें बड़ी रोचक और दिलचस्प हैं। इन्हें पढ़कर लाभ उठाइये:—

१. भारत पाँच हज़ार वर्ष पहले
२. भारत की कहानी
३. दुनिया की कहानी
४. फ्रान्स की क्रान्ति
५. रूस की क्रान्ति
६. अमरीका की क्रान्ति

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य पाँच आने

मिलने का पता :

मक्तबा जामिआ लिमिटेड, जामिआनगर, देहली

इण्डिया प्रिंटर्स, देहली। जगदीश आर्ट प्रेस, (टाइटिल)